आत्मा सम्बन्धी विचार

Philosophy
Part - I (H)

Q शंकर के आत्मा सम्बन्धी विचार की व्याख्या करें।
Explain Shankara's Conception of Self (Atman).

Ans. अद्वैतवादी शंकर परमसत्ता को एक मानते हैं। उनके मत में आत्मा और ब्रह्म एक ही है, दो नहीं। हम साधारणतः अपनी आत्मा को ब्रह्म से पृथक सत्ता मान लेते हैं। वास्तव में ब्रह्म और आत्मा दोनों एक ही है। शंकर आत्मा को स्वयंसिद्ध (self-evident) मानते हैं। इसे सिद्ध करने के लिए तर्क की आवश्यकता नहीं पड़ती। जब कोई कहता है, 'मैं हूँ' या 'मैं नहीं हूँ' तब दोनों ही कथनों से आत्मा का अस्तित्व प्रकट होता है। इन कथनों पर कोई संदेह नहीं कर सकता क्योंकि संदेह करने के लिए भी कर्ता की आवश्यकता पड़ती है और यह कर्ता 'मैं' या आत्मा है। इस प्रकार आत्मा की सत्ता निर्विवाद रूप से सत्य है।

शंकर ने आत्मा और ब्रह्म दोनों को एक ही बताया है। ये दोनों एक ही सत्ता के दो नाम हैं। अज्ञान के कारण व्यक्ति इन दोनों में अन्तर पाता है। जिस प्रकार अज्ञानी विश्व को वास्तविक सत्ता मान लेता है। उसी प्रकार तत्वज्ञान के अभाव में व्यक्ति आत्मा को ब्रह्म से भिन्न मान लेता है। तत्वज्ञानी आत्मा और ब्रह्म में कोई भिन्नता नहीं पाते। उपनिषदों ने भी इन दोनों की अभिन्नता या एकता को स्वीकार किया है। तत् त्वमसि (Thou art that), अहं ब्रह्मास्मि (I am Brahman) आदि कथन इन दोनों की एकता का संदेश देते हैं। शंकर ने उपनिषद के इस संदेश को ही अत्यधिक कुशलता

Scanned by CamScanner

के साथ अपनाकर इसका प्रसार किया हो।

साधारणतः व्यक्ति अज्ञान के वशीभूत होकर आत्मा को शरीर या इन्द्रिया समझने की भूल कर बैठता है। वह अकसर कहा करता है- 'मैं मोटा हूँ', 'मैं दुबला हूँ' 'मैं बहरा हूँ'. आत्मा को इन्द्रिया मान लेते हैं। जब वह कहता है कि 'मैं लगड़ा हूँ' तब यहाँ मैं अर्थात आत्मा को कर्मेन्द्रिया मान लेते हैं ये सभी कथन अज्ञानियों के हैं। ज्ञानी व्यक्ति कभी आत्मा को शरीर, ज्ञानेंद्रिय या कर्मेंद्रिया समझने की भूल नहीं कर सकता। व्यावहारिक दृष्टिकोण से केवल इतना ही कहा जा सकता है कि आत्मा शरीर-युक्त है और इस शरीर में इंद्रियाँ रहती है।

शंकर सांख्य की भाँति दो प्रकार का शरीर मानते हैं-

(i) स्थूल शरीर (gross body)
(ii) सूक्ष्म शरीर (Subtle body)

स्थूल शरीर मृत्यु के साथ ही नष्ट हो जाता है; किन्तु सूक्ष्म शरीर मृत्यु के बाद भी आत्मा के साथ कायम रहता है। स्थूल शरीर के अन्दर सूक्ष्म शरीर रहता है, जो अन्तःकरण, प्राण एवं इन्द्रियों का समूह है। इस प्रकार, मृत्यु स्थूल शरीर को समाप्त कर देती है, न कि सूक्ष्म शरीर को।

आत्मा और ब्रह्म दोनों एक ही हैं। ब्रह्म 'सच्चिदानंद' है, इसलिए आत्मा भी सच्चिदानंद है। सच्चिदानंद तीन शब्द-खण्डो से बना है- सत् (existence), चित् (Consciousness) और आनंद (bliss)। ब्रह्म सत्ता, चेतना एवं आनंद से युक्त है। शंकर का आत्मा संबंधी

Scanned by CamScanner

यह विचार अन्य सभी भारतीय विचारधाराओं से अधिक पूर्ण दीख पड़ता है। न्यायदर्शन आत्मा को साधारणतः अचेतन मानता है। चेतना का इसमें उदय तब होता है, जब इसका सम्पर्क शरीर, इन्द्रिया एवं बाह्य पदार्थों से होता है। वैशेषिक दर्शन आत्मा का स्वरूप सत् बताता है। सांख्यदर्शन के अनुसार आत्मा चैतन्यस्वरूप है और इसी में सत्ता भी निहित है। किन्तु शंकर के अनुसार आत्मा 'सच्चिदानंद' है, अर्थात इसमें सत् चित् और आनन्द तीनों पाए जाते हैं।

सच्चिदानंद के स्वरूप में साधारण जीवन में भी आत्मा की झाँकी देखने को मिलती है। हमारा दैनिक जीवन तीन प्रकार की अनुभूतियाँ प्रस्तुत करता रहता है-

① जागरितावस्था (waking experience) ② स्वप्नावस्था (dreaming experience) ③ सुषुप्तावस्था (dreamless sleep experience). इन तीनों अवस्थाओं में चैतन्य विद्यमान रहता है। गहरी नींद के बाद उठकर व्यक्ति जब कहता है कि 'उसने गहरी नींद ली' तब यह स्पष्ट पता चलता है कि नींद में भी उसकी चेतना उसके साथ थी। इसलिए शंकर चैतन्य को भी आत्मा का स्वभाव बताते हैं। आत्मा में चैतन्य के साथ-साथ सत् एवं आनंद भी पाए जाते हैं। इसी कारण इसे सच्चिदानंद कहा जाता है। शंकर के अनुसार इसकी पूर्ण एवं स्पष्ट झाँकी सुषुप्तावस्था में मिल सकती है जागरितावस्था एवं स्वप्नावस्था में इसकी अस्पष्ट एवं क्षीण झाँकी मिल पाती है।

Scanned by CamScanner

यहाँ एक समस्या उठ खड़ी होती है। जब आत्मा (या ब्रह्म) ही एकमात्र सत्ता है तब फिर विभिन्न जीवों (individual Selves) में अन्तर क्यों पाया जाता है? क्यों कुछ जीव भद्र होते हैं और कुछ जीव अभद्र या दुष्ट होते हैं? शंकर ने उपमाओं के आधार पर इस समस्या का समाधान ढूँढ़ना चाहा है। इस प्रसंग में उनके दो सिद्धान्त 'प्रतिबिंबवाद' और 'अवच्छेदवाद' उल्लेखनीय हैं।

प्रतिबिंबवाद (The theory of Reflection): चन्द्रमा का प्रतिबिंब जल से भरे अनेक बरतनों पर पड़ता है। इन बरतनों में जिस प्रकार का जल रहता है, उसी प्रकार के चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब दीख पड़ते हैं। जिस बरतन में स्वच्छ एवं निर्मल जल है, उसमें चन्द्रमा का स्पष्ट एवं स्वच्छ प्रतिबिंब नजर आता है। जिस बरतन में गन्दा एवं धूमिल जल है, उसमें चन्द्रमा का अस्पष्ट एवं धूमिल प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ता है। ठीक इसी प्रकार आत्मा एक ही है। किन्तु इसके आत्मा का गंदा या अपवित्र प्रतिबिम्ब दीख पड़ता है। और वह जीव निम्नस्तर का माना जाता है जिस जीव में अविद्या की मात्रा कम रहती है उसमें आत्मा का कुछ स्पष्ट प्रतिबिम्ब दीख पड़ता है इस प्रकार के जीव उच्च कोटि के अर्थात् भद्र माने जाते हैं। यही कारण है कि विभिन्न जीवों में कुछ उच्च कोटि के हैं तो कुछ निम्न कोटि के।

यहाँ एक कठिनाई उत्पन्न होती है। उपर्युक्त उपमा में अविद्या को जल के रूप में लिया गया है। चन्द्रमा और जल तो भौतिक पदार्थ हैं, इसलिए जल एवं चन्द्रमा का

Scanned by CamScanner

प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ता है। किन्तु आत्मा और अविद्या दोनों ही आकृतिहीन एवं अभौतिक हैं। इसलिए अविद्या पर आत्मा का प्रतिबिम्ब कैसे दीख पड़ेगा ? इस प्रकार की कठिनाईयों से बचने के लिए शंकर ने अवच्छेदवाद (the theory of limitation) का सहारा लिया है

अवच्छेदवाद (The theory of limitation): शंकर का कहना है कि आत्मा दिक् (space) के समान एक है। जिस प्रकार हम 'दिक्' को अपनी सुविधा के अनुसार अनेक कृत्रिम खण्डों में विभक्त करते हैं ठीक उसी प्रकार एक ही आत्मा अनेक आत्माओं के रूप में दीख पड़ती है। जिस प्रकार एक ही सूर्य या चन्द्रमा के अनगिनत प्रतिबिम्ब दीख पड़ते हैं, ठीक उसी प्रकार एक ही आत्मा या ब्रह्म की अनेक झाकियाँ दीख पड़ती हैं। ऐसा अज्ञानवश होता है। अज्ञान हटते ही व्यक्ति आत्मा की एकता समझ लेता है। अज्ञान के कारण ही व्यक्ति एक ही आत्मा को अनेक आत्माओं या जीवों में प्रतिबिंब देखता है। तत्वतः आत्मा को एक मानते हैं और यही ब्रह्म है

जीव और ईश्वर में संबंध — शंकर के अनुसार जब ब्रह्म मायायुक्त होता है, तब वह ईश्वर बन जाता है। जब वह अविद्या से संबद्ध होता है, तब जीव बन जाता है। इस प्रकार ईश्वर और जीव दोनों ही वास्तविक नहीं कहे जा सकते। ये तो ब्रह्म के विवर्तमात्र हैं। जिस प्रकार ईश्वर और जीव दोनों ही वास्तविक नहीं कहे जा सकते। ये तो ब्रह्म विवर्तमात्र हैं।

Scanned by CamScanner

जिस प्रकार अग्नि की विभिन्न चिनगारियों में गर्मी पाई जाती है, ठीक उसी प्रकार ईश्वर और जीव में शुद्ध चेतना (Pure consciousness) पाई जाती है।

उपर्युक्त समानता के बावजूद दोनों में निम्नलिखित अन्तर भी पाए जाते हैं:-

(i) ईश्वर मुक्त (free) है, तो जीव बंधनग्रस्त। ईश्वर अकर्ता (non-doer) है, तो जीव कर्ता। ईश्वर उपास्य, अर्थात् उपासना का विषय (object of worship) है, तो जीव उपासक (worshipper)

(ii) ईश्वर जीवों का शासक है, किन्तु जीव शासित है।

(iii) ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिशाली, सर्वव्यापक है, किन्तु जीव अपूर्ण, तुच्छ, दुर्बल एवं अज्ञान के वशीभूत है।

आत्मा और जीव का संबंध (Soul and individual self)

शंकर के अनुसार आत्मा और ब्रह्म एक ही है। आत्मा परमार्थिक रूप से सत्य है, किन्तु जीव व्यावहारिक रूप से सत्य है। जब आत्मा शरीर, इन्द्रिय, मन आदि से संबंद्ध होकर सीमित हो जाती है तब इसे ही जीव कहते हैं। अज्ञान का प्रतिबिम्ब जब आत्मा पर पड़ता है, तब वह जीव बन जाता है। जीव आत्मा का विवर्त है।

आत्मा एक है, किन्तु जीव अनेक हैं। जितने व्यक्ति विशेष हैं, उतने जीव भी हैं।

"जीव आत्मा का वह रूप है, जो देहयुक्त है" इसके तीन प्रकार के शरीर होते हैं - स्थूलशरीर, लिंगशरीर, और कारणशरीर। अज्ञानवश आत्मा जब बुद्धि से संबंध होती है, तब वह जीव बन जाती है। जीव बुद्धि से पृथक है। इस तथ्य का ज्ञान आवश्यक माना गया है।

Scanned by CamScanner